महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय, उज्जैन

(राष्ट्रीय मूल्याङ्कन एवं प्रत्यायन परिषद् द्वारा A श्रेणी में प्रत्यायित)

ज्योतिर्विज्ञान विभाग, वेद विभाग

एवं

महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन

के संयुक्त तत्त्वावधान में

त्रि-दिवसीय

अखिल भारतीय वैदिक सङ्गोष्ठी

10, 11, 12 फरवरी (मङ्गलवार, बुधवार, गुरुवार)

विषय – वेदों में खगोलीय ज्ञान एवम् अनुप्रयोग

(Astronomical knowledge and its applications in the Vedas)

स्थान

महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय परिसर

देवास मार्ग, उज्जैन (म.प्र.)

सङ्गोष्ठी का उद्देश्य

ज्योतिष एक वेदाङ्ग है। इसे वेदपुरुष का नेत्र कहा गया है। यदि नेत्र है, तो उसके लिए कुछ दृश्य भी होगा और वह दृश्य है खगोल। खगोल क्यों देखा जाएगा, यह समझना भी ज्योतिष के वेदाङ्गत्व में छुपा हुआ है। तस्मादिदं कालविधानशास्त्रं यो ज्यौतिषं वेद स वेद यज्ञान्। आचार्य लगध की यह उक्ति स्पष्ट करती है कि ज्योतिष कालविधान शास्त्र है। और इस कालविधान का प्रयोजन थे यज्ञ। यज्ञीय वैदिक संस्कृति ज्योतिष, वास्तु, साहित्य, कला, गणित आदि ज्ञान-विज्ञानों का आधार है। भारतीय ज्ञान परम्परा का मूल वेद ही हैं। सूर्यमासा विचरन्ता दिवि इस वाक्य में चन्द्र को मास कह देना कालविधान का ही प्रभाव है। किन्तु इस चान्द्रमास का आधार क्या है? वह है नक्षत्र मण्डल में चन्द्र का भ्रमण। नक्षत्र और ग्रह विशुद्ध रूप में खगोल का विषय हैं। वैदिक वाङ्मय में न केवल नक्षत्रों अपितु अन्य भी तारामण्डलों का उल्लेख मिलता है। स्वर्भानु की वैदिकी चर्चा ग्रहण सदृश खगोलीय घटना से सम्बन्ध रखती है। तारों का तारकत्व क्या है? बृहस्पति का पुष्यनक्षत्र से क्या सम्बन्ध है? रोहिणी नक्षत्र के नामकरण का क्या कारण है? वर्ष, ऋतु, मास, दिन, मुहूर्त आदि कालावयवों की सङ्कल्पना का मूल कहाँ है? ऐसे अनेक खगोलशास्त्र विषयक प्रश्नों का समाधान केवल वैदिक वाङ्मय में ही प्राप्त होगा। हमारी वर्तमान पीढ़ी ज्योतिष के वेदाङ्गत्व का प्रत्यक्ष अनुभव कर सके, वह भारतीय खगोलविद्या के मूल को समझे और वैदिक वाङ्मय की वैज्ञानिकता को जाने, इन्हीं उद्देश्यों से इस सङ्गोष्ठी का चिन्तन किया गया है।

उपविषय

1- खगोल-विद्या का वैदिक आधार
2- वैदिक वाङ्मय में सूर्य एवं चन्द्र का वैज्ञानिक स्वरूप
3- नक्षत्र-चक्र का वैदिक वर्णन
4- काल-गणना और ऋतु-चक्र को वेदसम्मत अवधारणा
5- ग्रहण-विज्ञान का प्रारम्भिक उल्लेखःस्वर्भानु प्रसङ्ग
6- वेदों में दिशा-निर्धारण एवं खगोलीय संकेत
7- वेदाङ्ग ज्योतिष-खगोलविद्या का शास्त्रीय विकास
8- नक्षत्राधारित पञ्चाङ्ग-व्यवस्था के विकास में वैदिक आधार
9- वैदिक खगोल-विद्या का कृषि एवं ऋतु विज्ञान में उपयोग
10- काल-निर्धारण एवं सामाजिक अनुष्ठानों में खगोल का प्रयोग
11- वास्तु-विज्ञान और दिशा-चक्र-वैदिक आधार
12- वैदिक खगोल-विद्या और आधुनिक खगोल विज्ञान का तुलनात्मक अध्ययन
13- सूर्य-सिद्धान्त और वैदिक परम्परा का सम्बन्ध
14- आर्यभट्ट, वराहमिहिर आदि ऋषि-वैज्ञानिकों के चिन्तन में वैदिक परम्परा
15- वेदों में ब्रह्माण्ड-निरूपण-दार्शनिक एवं वैज्ञानिक पक्ष
16- नासदीय सूक्त तथा हिरण्यगर्भ सूक्त में सृष्टिविचार
17- वैदिक खगोल-विद्या के प्रचारक-पुराण और सिद्धान्त ग्रन्थ
18- वैदिक आकाश-विज्ञान और पर्यावरण विज्ञान का अन्तःसम्बन्ध
19- वेदों में देवताओं का खगोल-वैज्ञानिक प्रतीकवाद
20- समकालीन युग में वैदिक खगोल-विद्या का पुनर्पाठ और शोध-दिशाएँ
21- अथर्ववेद में पृथ्वी और अन्तरिक्ष का वर्णन।

आयोजन समिति

— संरक्षक —

प्रो. शिवशङ्कर मिश्र
माननीय कुलगुरु
महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय, उज्जैन

— मार्गदर्शक —

प्रो. दिलीप सोनी
कुलसचिव
महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय, उज्जैन

— परामर्श परिषद् —

डॉ. तुलसीदास परौहा
डॉ. पूजा उपाध्याय
डॉ. अखिलेशकुमार द्विवेदी
डॉ. उपेन्द्र भार्गव
डॉ. अजयसिंह राठी
डॉ. अनिल मुवेल

— संयोजक —

डॉ. सङ्कल्प मिश्र
विभागाध्यक्ष (वेद विभाग)
महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय, उज्जैन

डॉ. शुभम् शर्मा
विभागाध्यक्ष (ज्योतिर्विज्ञान विभाग)
महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय, उज्जैन

— सह-संयोजक —

डॉ. पतञ्जलि कुमार पाण्डेय, डॉ. अङ्कित शाण्डिल्य, डॉ. विजयकुमार,
डॉ. योगेश कुमार, डॉ. अविनाश मिश्र, डॉ. पवनकुमार मिश्र, डॉ. रूपेशकुमार मिश्र

शोध–पत्र आमन्त्रण एवं पंजीकरण

इस सङ्गोष्ठी हेतु विश्वविद्यालयों/महाविद्यालयों के आचार्यों, प्राध्यापकों एवं शोधच्छात्रों से शोधपत्र आमन्त्रित किये जाते हैं -

पञ्जीकरण शुल्क :

प्राध्यापक - 1500/- रुपये

शोधच्छात्र - 750/-रुपये

पञ्जीयन हेतु
https://forms.gle/EMutzmX8bdqd4Dv36

ऑनलाइन पञ्जीकरण शुल्क जमा करने हेतु विवरण :

Beneficiary Name - Registrar, Maharshi Panini Sanskrit evam Vedic Vishwavidyalaya, Ujjain

Account No. 910310210000027, IFSC : BKID0009103.

उपर्युक्त तथा तत्सम्बद्ध विषयों पर पूर्ण शोधपत्र संस्कृत, हिन्दी अथवा अंग्रेजी भाषा में भेज सकते हैं। कृपया देवनागरी लिपि के टङ्कण के लिए Arial Unicode MS, फॉण्ट साइज 12 एवं रोमन के लिए Time New Roman फॉण्ट साइज 12 का प्रयोग करें।

नोट - पञ्जीकरण करने वाले प्रतिभागियों को आवास तथा मार्गव्यय स्वयं वहन करना होगा।

आयोजक

ज्योतिर्विज्ञान विभाग
महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय
उज्जैन (म.प्र.)

वेद विभाग
महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय
उज्जैन (म.प्र.)

सहयोग

वास्तु विभाग – महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय, उज्जैन
ज्योतिष विभाग – महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय, उज्जैन

सम्पर्क सूत्र

Mobile : 9993067122, 9424893133, 9163472609
8109792047, 9455927740, 9452648807